प्रातःक्लास 13.4.68 ओमशान्ति "शिवबाबा और वर्सा याद है?"

ओमशान्ति। अभी बच्चों के दो क्लास होते हैं, यह अच्छा है। एक याद की यात्रा, जिससे पाप कटते जावेंगे, आत्मा पवित्र बनती जावेगी। दूसरा क्लास फिर होता है ज्ञान का। ज्ञान भी सहज है। कोई डिफीकल्ट नहीं। तुम्हारे सेन्टर और यहां में फ़र्क रहता है। यहां तो बाप बैठे हैं और बच्चे हैं। यह मेला है बाप और बच्चों का और तुम्हारे सेन्टर में मेला लगता है बच्चों का आपस में; इसलिए बच्चे सम्मुख आये हैं। भल याद करते हैं; परन्तु तुम सम्मुख देखते हो। तुम्हीं से बैठूँ, तुम्ही से बात–चीत करूँ, खेलूँ। बाप ने समझाया है। बाप और बच्चों की एक्टिविटी में फ़र्क है। ख़याल करो इस बाबा का पार्ट क्या है और रथ का पार्ट क्या है? क्या बाबा रथ द्वारा खेल सकते हैं? हां, खेल सकते हैं। जब कहते हैं तुम्हीं से बैठूँ, खेलूँ..... ऐसे नहीं तुम्हीं से खाऊँ; क्योंकि वह खुद तो खाते नहीं। बच्चों साथ खुलना–कूदना(खेलना–कूदना) वह तो खुद .... हैं। जैसे दोनों खेलते हैं। करते तो सभी कुछ यहां ही हैं तुम्हारे साथ; क्योंकि सुप्रीम टीचर भी है। टीचर का तो काम है बच्चों को बहलाना। इनडोर गेम होते हैं ना। आजकल तो गेम्स भी बहुत निकल गये हैं भिन्न–2 प्रकार के। सभी से नामी–ग्रामी है चौपड़ का खेल। जिसका महाभारत में भी वर्णन है; परन्तु वह जुआ के रूप में (है)। जुआ वाले पकड़ते हैं। एक जुआ होती है गवर्मेन्ट की पास की हुई। जैरे रेस है उसमें भी बहुत दिवाला मार देते हैं। अभी यह भी भक्तिमार्ग से उल्टी रसम निकली है। पैसे से खेलना, जुआ कहते हैं। उनको बन्द नहीं कर सकते। गवर्मेन्ट भी है अनलॉफुल। बाहर में जो खेलेंगे उनको जुआ का रूप देंगे। (क्लब) में खेलेंगे तो उनको जुआ का रूप नहीं देंगे। ऐसे बहुत क्लबें हैं जहां हज़ारों की जुआ होती है। नेपाल में जुआ के तीन दिन मुकर्रर होते हैं। खास एलान निकलता है जुआ ही जुआ। राजे–रजवाड़े सभी जुआ खेलते हैं। यह आया कहां से? महाभारत से। दिखाते हैं दांव लगाया। स्त्री का दांव सच्च–2 लगाते हैं। बाबा अनुभव से सुनाते हैं। कहते हैं तुम जीता तो हमारी स्त्री तुम्हारे पास, अगर हमने जीता तो तुम्हारी स्त्री हमारे पास। यह सभी भक्तिमार्ग के, जिसको पुस्तक कहते हैं उनसे बातें निकाली हैं। मनुष्यों को पता नहीं है। अभी तुम जानते हो भक्तिमार्ग यह सभी झूठामार्ग है। झूठ ही झूठ है। पूजा भी झूठी। सच तो तब हो जब उनको जानते हों। नहीं तो झूठ ही झूठ है। जिसको अंधश्रद्धा ,ब्लाइन्ड–फेथ कहा जाता है। अभी यह तुम ही सुनते हो। साधु–संत आदि कभी नहीं कहेंगे कि यह ब्लाइन्ड–फेथ है। गाया भी जाता है अंधे की औला(द) अंधे। भक्तिमार्ग में है ही अंधश्रद्धा। वर्त(व्रत)–नेम आदि सभी भक्तिमार्ग के(की) बातें हैं। 7–7 रोज निंजल रहते है। खाना भी नहीं खाते। इसको तो हठ कहेंगे ना। प्राप्ति कुछ भी नहीं। अगर भक्तिमार्ग में प्राप्ति होती भी है तो अल्प काल लिए। यहां तो तुम बच्चों को सभी कुछ समझाया जाता है। भक्तिमार्ग को कहा ही जाता है धक्का खाने का मार्ग। ज्ञानमार्ग है सुख का मार्ग। तुम जान गये हम सुख का वर्सा बाप से ले रहे हैं; इसलिए भक्तिमार्ग में भी याद करना एक को। एक की ही पूजा अव्यभिचारी पूजा है। वह फिर भी अच्छी है। सतो. रजो. तमो तो होते हैं ना। भक्ति में भी सतो, रजो, तमोगुणी होते हैं। सबसे ऊँच ते ऊँच सतोगुणी है शिवबाबा की भक्ति। शिवबाबा ही आकर सुखधाम बच्चों को ले जाते हैं। उस बाप को ही ऋषि–मुनि आदि कोई भी नहीं जानते। आरफन हो गये हैं। रचयिता बाप को और रचना के आदि, मध्य, अंत को कोई नहीं जानते तो आरफन ठहरे ना। इनको कहा जाता है आरफन दुनियां। आरफन उनको कहा जाता है जो बाप को नहीं जानते हैं। यह तो बाप समझकर भी पत्थर–ठिक्कर–भित्तर में कुत्ते–बिल्ले सबमें कह देते है।। कितनी ग्लानी है। कहते भी हैं यदा यदा हि धर्मस्य..... ....; परन्तु अर्थ को नहीं जानते हैं। भगवानुवाचः तुमने हमारी बहुत ग्लानी की है। सबसे जास्ती मेरी ग्लानी की है। जो सबसे जास्ती बच्चों की सेवा करते हैं, पावन बनाते हैं। उनको पुकारते भी हैं फिर कहते हैं ठिक्कर–भित्तर में। इसको कच्ची (गा)ली कहा जाता है। एक/दो को कहते भी हैं उल्लू का बच्चा या तो कहेंगे तुम्हारी बुद्धि तो जैसे ठिक्कर–भित्तर है। भल कितने भी साहूकार हैं ; परन्तु यह सभी हैं अल्पकाल लिए। यह तो सभी खलास हुये पड़े हैं। तुम बच्चों को बेहद के बाप द्वारा

राज–भाग मिला था। फिर मिलना है ज़रूर। तुम ज्ञान को अलग, भक्ति को अलग समझते हो। रामराज्य और रावणराज्य कैसे चलता है यह भी तुम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हो; इससिलए पत्रे आदि भी छपाते रहते हैं; क्योंकि मनुष्यों को सच्ची समझानी भी चाहिए ना। तुम्हारा सभी कुछ है सच्च। बाकी सभी है कुड़(झूठ) । सच्च और झूठ बिल्कुल अलग है; इसलिए तुम पर्चों में भी छपाते हो। यह तो प्रश्न बनी है उनसे पूरी सर्विस करनी चाहिए। सर्विस तो बहुत है। यह बैज ही कितना अच्छा है। सबसे बड़ा शास्त्र है यह बैज। अभी यह है ज्ञान की बातें। इसमें समझना पड़ता है। वह याद की यात्रा अलग है। उसको कहा जाता अजपा–जाप। जपना कुछ भी नहीं है। अन्दर में भी शिव–2 नहीं कहना है। सिर्फ़ बाप को याद करना है। यह तो जानते हो शिवबाबा बाप है, हम आत्माएं उनकी संतान हैं। वही सम्मुख आकर कहते हैं मैं पतित–पावन हूँ। मैं कल्प–2 आता हूं पावन बनाने। देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को छोड़ अपन को आत्मा समझ मुझ अपने बाप को याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। मेरा पार्ट ही है पतितों को पावन बनाने का। यह है बुद्धि का योग अथवा संग बाप के साथ। संग से रंग लगता है ना। कहा जाता है संग तारे कुसंग बोरे। बाप से बुद्धियोग लगाने से तुम पार हो जाते हो। फिर उतरने शुरू कर देते हैं। इनके लिए कहा जाता है सत का संग तारे। इसका अर्थ भी भक्तिमार्ग वाले नहीं जानते। तुम समझते हो। हमारी आत्मा पतित है। वह पावन साथ बुद्धि का योग लगाने से पावन बनते हैं। आत्मा को परमात्मा को याद करना पड़ता है। जब आत्मा पवित्र बन जाती है तब शरीर भी पवित्र बन(ता) है। सच्चा सोना बने। यह है याद की यात्रा। योगअग्नि जिससे विकर्म भस्म होते हैं। खाद निकलती जाती है। तुम जानते हो सतयुग नई दुनियां में हम पवित्र सम्पूर्ण निर्विकारी थे। 16 कला सम्पूर्ण थे। अभी कोई कला नहीं रही है। इसको कहा जाता है राहू का ग्रहण। सारी दुनियां खास भारत पर राहू का ग्रहण लगा हुआ है। तत्व भी काले हैं। जो कुछ भी तुम इन आँखों से देखते हो सब काले ही काले हैं। ल.ना., राम–सीता आदि की आत्माएं भी काली हैं इस समय। यथा राजा–रानी तथा प्रजा..... श्याम सुन्दर का अर्थ भी कोई नहीं जानते। कितने नाम मनुष्यों के रख देते हैं। अभी बाप ने आकर अर्थ समझाया है। तुम ही पहले सुन्दर थे फिर श्याम बने हो। ज्ञान चिक्षा पर बैठने से तुम सुन्दर बन जाते हो। फिर भी यह बनना है। श्याम से सुन्दर, सुन्दर से श्याम। उनका अर्थ भी बाप ने तुम आत्माओं को समझाया है। हम आत्माएं एक बाप को ही याद करतीं हैं। बुद्धि में आ गया है हम बिन्दी हैं। इसको कहा जाता है आत्मा की रियलाइज़ेशन। फिर देखने लिए इन साइट। देखना वा न देखना यह तो समझने की बातें हैं। आत्मा को समझाना है मैं आत्मा हूँ। यह मेरा शरीर है। हम यहां शरीर में आकर पार्ट बजाती हैं। पहले–2 हम आते हैं ड्रामा के प्लैन अनुसार। आत्माएं तो सभी हैं। कोई में पार्ट कितना है, कोई में कितना है। यह बड़ा भारी बेहद का नाटक है। इसमें नम्बरवार कैसे आते हैं, कैसे पार्ट बजाते हैं यह भी तुम जानते हो। पहले–2 देवी–देवता घराणा है। यह नॉलेज अभी तुमको है। इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर। बाद में फिर भी कुछ याद न रहेंगे। बाप खुद कहते हैं यह ज्ञान प्रायःलोप हो जाता है। किसको भी पता नहीं है देवी–देवता धर्म की स्थापना कैसे हुई। चित्र तो है। वह कब, कैसे स्थापन हुआ किसको भी पता नही है। तुम बच्चों को पता है। फिर तुम औरों को आप समान बनाते हो। बहुत हो जावेंगे। तो ज़रूर मकान भी बड़ा बनाना पड़ेगा। लाउडस्पीकर भी रखना पड़ेगा। कोई ज़रूर युक्ति निकलेंगी। बहुत बड़ी हॉल की दरकार नहीं। आवाज़ तो बहुत दूर तक जाकर सुन सकते हैं। इसमें रड़ियां भी नहीं मारनी होती हैं। जैसे कल्प पहले जो एक्ट की थी वही फिर होंगे। यह समझ में आता है। बच्चे वृद्धि को पाते रहेंगे। उनके लिए बहुत बनाना पड़ेगा। बाबा ने समझाया था शादी के लिए जो हॉल बनाते हैं उनको भी समझाओ। यहां भी शादी के लिए धर्मशाला बना रहे हैं। कोई अपने कुल के होंगे तो झट समझ जाते हैं। कोई नहीं है जो इस कुल के न होंगे वह विघ्न डालेंगे। जो इस कुल के होंगे वह मानेंगे यह सत्य

कहते हैं। हम क्या करते हैं। यह तो हम खून कराने लिए प्रबन्ध देते हैं। जो इस धर्म के न होंगे वह लड़ेंगे। यह तो र(स)म चली आ रही है। यह जानते ही नहीं पवित्र प्रवृति मार्ग था। अभी अपवित्र प्रवृतिमार्ग है। फिर बाप आये हैं पावन बनाने। ट्रस्टियों का भी झगड़ा चल पड़ता है। कोई कहेंगे देना चाहिए, कोई कहेंगे नहीं। तुम्हारा धंधा ही झगड़े का है; क्योंकि तुम प्यूरिटी पर ज़ोर देते हो। कितने विघ्न पड़ते हैं। आगा खां है, कितना उनका मान है। पोप का भी कितना मान है। तुम जानते हो पोप क्या करते हैं। लाखों–करोड़ों शादियां कराते हैं। बहुत शादियां होती है। पोप आकर हथियाला बांधते हैं। इस पर वह लोग इज्जत समझते हैं। तुम कहेंगे यह तो खूनी नाहक का धंधा करते हैं। महात्माओं को भी शादी पर मंगाते हैं। आजकल सगाई भी करते हैं। बाप तो कहते हैं काम महाशत्रु है। यह आर्डीनेन्स निकालना मासी का घर नहीं है। कोसखाना बन्द करना समझाना हैं। बड़ी युक्ति चाहिए समझाने की। आगे चलकर आस्ते–2 समझते जावेंगे। आदि सनातन हिन्दु धर्म वाले जो हैं उनको पकड़ो। वह झट समझ जावेंगे कि बरोबर आदि सनातन देवी–देवता धर्म था कि हिन्दु। जैसे तुम बाप द्वारा जान गये हो। वैसे और भी समझकर वृद्धि को पाते रहेंगे। यह भी पक्का निश्चय है। यह कलम लगता जावेगा।कलम लगते–2 ताकि आदि सनातन देवी–देवता धर्म वाले ही बन जावेंगे। ड्रामा अनुसार। तुम बाप की श्रीमत पर यह देवता बनते हो। यह है नई दुनियां में रहने वाले। पहले तुमको यह थोड़े ही मालूम था कि बाप संगमयुग पर हमको ट्रान्सफर करेंगे। ज़रा भी पता नहीं था। अभी तुम समझते हो सच्चा–2 पुरुषोत्तम संगमयुग इसको कहा जाता है। हम पुरुषोत्तम बन रहे हैं। अभी जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना बनेंगे। हरेक को अपने दिल से पूछना है। स्कूल में जब सबजेक्ट्स में कच्चे होते हैं तो समझ जाते हैं हम नापास होंगे। यह भी स्कूल है। गीता पाठशाला मशहूर है। फिर उनका नाम थोड़ा फिराये दिया है। तुम लिखते हो सच्ची गीता, झूठी गीता। तो भी बिगड़ेंगे ज़रूर। खिट–2 होगी। इसमें डरने की भी बात नहीं। पहले भी कितने विघ्न डाले थे। आग लगाते थे। आजकल तो यह सब करते रहते हैं। फैशन पड़ गया है। बसों को जलाना, आग लगाना, यह सब कहां से सीखे हैं? बापू से। जिसने जो सिखाया वही सीखे हैं। आगे से भी जास्ती। सभी पिकेटिंग आदि करते रहते हैं। गवर्मेन्ट को भी घाटा पड़त(ा) है तो हर वर्ष टैक्स आदि बढ़ाती जाती है। एक दिन बैंक के खाने आदि सभी खुलवावेंगे। अनाज आदि के लिए भी जांच करते हैं। कहां सस्ती तो नहीं रखा है। इन सभी बातों से तुम छूटे हुये हो। तुम्हारे लिए है ही मुख्य याद की यात्रा। बाप कहते हैं मेरा इन बातों से कोई वास्ता नहीं है। मेरा तो सिर्फ़ काम है रास्ता बताना। तो तुम्हारे सब दुःख दूर हो जावेंगे। इस समय तुम्हारा कर्मो का हिसाब–किताब चुक्तू होता है। डरना न है। बीमार में भी मनुष्यों को भगवान की याद दिलाई जाती है ना। तुम हॉस्पीटल में भी जाकर नॉलेज दो तो 21 जन्म लिए कब रोगी नहीं बनेंगे। दुःख में सभी भगवान को याद करते हैं ना। तो अभी एक बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो जावेंगे। सिर्फ़ इस जन्म की बात नहीं। भविष्य 21 जन्मों के लिए गैरन्टी करते हैं। बाप को याद करने से आयु भी बढ़ेगी। भारत की आयु बड़ी थी। निरोगी थे। अभी बाप तुम बच्चों को श्रीमत देते हैं श्रेष्ठ बनाने लिए। पुरुषोत्तम अक्षर तो कब भूलो नहीं। कल्प–2 तुम ही बनते हो। ऐसे और कोई कह भी न सके। तो ऐसे–2 सर्विस बहुत कर सकते हैं। कोई भी समय टाइम ले सकते हो। नौकरी करने वाले भी बहुत सर्विस कर सकते हैं। मरीज़ों को बोलो हमारा भी बड़ा डॉक्टर है। अविनाशी बेहद के सर्जन के हम बने हैं जिससे हम 21 जन्म निरोगी बनते हैं। हेल्थ मिनिस्टर आदि को भी समझाओ। तुम हेल्थ के लिए इतना माथा मारते हो। सतयुग में तो तुम बहुत कम थे। शान्ति–सुख–पवित्रता थी। सारी दुनियां में तुम ही सभी का कल्याण करने वाले हो। तुम पण्डे हो ना। पाण्डव सम्प्रदाय। किसकी बुद्धि में नहीं होगा पाण्डव कौन थे। फूड मिनिस्टर को भी समझा सकते हो। पहले–2 सबसे बड़ा फूडमिनिस्टर तो है शिवबाबा। इतना अनाज देते हैं जो बात मत पूछो। कब खुट न सके। अभी तो भारत कितना इनसॉल्वेन्ट बन गया है। पुराना (दे)श ग़रीब देख उनको मदद करते हैं। अकल वाले आकर उनको सिखलाते रहते हैं। अभी तुम संगमयुग पर हो। चक्र तुम्हारी बुद्धि (में) है। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग।